अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : तृतीय– जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 05 जनवरी, 2025)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1 = (15)

(i) कितने महीने की दीक्षा पर्याय वाले श्रमण निर्ग्रन्थ का सुख नवग्रैवेयक देवों के सुख से बढ़ कर होता है-
(क) ग्यारह मास (ख) बारह मास
(ग) दस मास (घ) नौ मास (क)

(ii) मनुष्य कितने समय में श्वासोच्छ्वास लेते हैं-
(क) सात स्तोक (ख) संख्यात आवलिका
(ग) सात प्राण (घ) विमात्रा में (घ)

(iii) शिवराज ऋषि ने कौनसी भावना भाई थी-
(क) बोधि दुलीा भावना (ख) लोक भावना
(ग) निर्जरा भावना (घ) धर्म भावना (ख)

(iv) निम्न में से कौनसा संस्थान नहीं है-
(क) भूमण्डल (ख) वृत
(ग) त्रिकोण (घ) आयत (क)

(v) इन्द्रियों का दमन करने वाला जितेन्द्रिय यह अर्थ किस शब्द का है-
(क) क्षान्त (ख) दान्त
(ग) अमायी (घ) अपश्चातापी (ख)

(vi) निम्न में से कौनसा धर्म ध्यान का लक्षण नहीं है-
(क) आज्ञा रुचि (ख) निसर्ग रुचि
(ग) आदेश रुचि (घ) सूत्र रुचि (ग)

(vii) भव भ्रमण का थोकड़ा कौनसे सूत्र में चलता है-
(क) दशवैकालिक सूत्र (ख) भगवती सूत्र
(ग) सुख विपाक सूत्र (घ) दुख विपाक सूत्र (ख)

(viii) अव्यवहार राशि में भवी जीव कितने होते हैं-
(क) असंख्यात (ख) संख्यात
(ग) अनन्तानन्त (घ) तीनों ही गलत (ग)

(ix) योग के निमित्त से कौनसा बंध होता है-
(क) स्थिति बंध (ख) अनुभाग बंध
(ग) प्रकृति बंध (घ) तीनों ही सही (ग)

(x) चना, परमल आदि का आहार लेना किसका अर्थ है-
(क) लूहाहारे (ख) अंताहारे
(ग) पंताहारे (घ) आयंबिलए (ख)

(xi) तीन मास की दीक्षा पर्याय वाले श्रमण निर्ग्रन्थ का सुख किससे बढ़कर है-
(क) असुर कुमार से (ख) नव निकाय देव
(ग) वाणव्यन्तर देव (घ) ज्योतिषी देव (क)

(xii) जघन्य दो पक्ष, उत्कृष्ट सात पक्ष में कौनसे देवलोक के देव श्वासोच्छ्वास लेते हैं-
(क) दूसरा देवलाक (ख) तीसरा देवलोक
(ग) चौथा देवलोक (घ) पाँचवाँ देवलोक (ख)

(xiii) एक भी आकाश प्रदेश खाली न रहा, जहाँ इस जीव ने जन्म-मरण नहीं किया हो, इसका भव भ्रमण के थोकड़े में किसका दृष्टान्त दिया-
(क) गोशाला का (ख) बकरियों के बाड़े का
(ग) अनाथालय का (घ) वृद्धाश्रम का (ख)

(xiv) पुरुष लिंग सिद्ध के अन्तर्गत पाठ्यपुस्तक में किसका उदाहरण दिया है-
(क) सुधर्मा स्वामी (ख) महावीर स्वामी
(ग) जम्बू स्वामी (घ) गौतम स्वामी (घ)

(xv) आकाश में उड़ने वाले पक्षी कौनसे होते हैं-
(क) उरपरिसर (ख) स्थलचर
(ग) खेचर (घ) भुजपरिसर (ग)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 15x1=(15)

(i) कर्म भूमि में साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका रूप चार तीर्थ हैं। (हाँ)
(ii) अरूपी अजीव के पाँच सौ तीस भेद हैं। (नहीं)
(iii) यह लोक असंख्यात कोड़ाकोड़ी सागरोपम का लम्बा-चौड़ा है। (हाँ)
(iv) तेजो लेश्या प्रशस्त लेश्या है। (हाँ)
(v) श्वासोच्छ्वास प्रक्रिया हर गति, जाति आदि जीवों में अलग-अलग प्रकार से होती है। (हाँ)
(vi) चौदहवें गुणस्थान में जीव शैलेशी भाव अंगीकार कर चार घाती कर्मों का क्षय करता है। (नहीं)
(vii) व्युत्सर्ग का अर्थ त्याग है। (हाँ)
(viii) अनाशातना विनय के 45 भेद होते हैं। (हाँ)
(ix) अंजणा नरक का गोत्र पंक प्रभा है। (हाँ)
(x) अकर्मभूमि के पन्द्रह भेद नहीं होते हैं। (हाँ)
(xi) हिंसा, झूठ, चोरी आदि दोषों का सेवन करना आर्त्तध्यान का लक्षण है। (नहीं)
(xii) कायाक्लेश तप के 23 भेद होते हैं। (नहीं)
(xiii) सर्वार्थसिद्ध विमान के देव जघन्य 31 पक्ष उत्कृष्ट 33 पक्ष में श्वासोच्छ्वास लेते हैं। (नहीं)
(xiv) जीवों का भवसिद्धिपना स्वभाव से हैं, परिणाम से नहीं है। (हाँ)
(xv) भिक्षाचर्या का दूसरा नाम 'वृत्ति संक्षेप' भी है। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- 10x1=(10)

(i)	जलचर	(क) शाश्वत	सुंसुमार
(ii)	तदुभय	(ख) ग्रैवेयक	आलोचना व प्रतिक्रमण
(iii)	लोक	(ग) झूठा कलंक	शाश्वत
(iv)	अनुभाग बंध	(घ) सुंसुमार	रस बंध
(v)	स्तेनानुबंधी	(च) दीक्षा पर्याय में कमी	चोरी
(vi)	अण्णायचरए	(छ) चोरी	अज्ञात कुल
(vii)	सुदर्शन	(ज) उल्कापात	ग्रैवेयक
(viii)	तेऊकाय	(झ) आलोचना व प्रतिक्रमण	उल्कापात
(ix)	अभ्याख्यान	(य) रस बंध	झूठा कलंक
(x)	छेद	(र) अज्ञात कुल	दीक्षा पर्याय में कमी

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1=(15)

(i) मेरा त्याग करने से जीव संसार से तिर जाता है। अठारह पापों का
(ii) मैं एक ऐसा अणगार हूँ, जो नपुंसक पर्याय में रहकर मोक्ष में गया हूँ। गांगेय अणगार
(iii) हमारे में क्षायिक और पारिणामिक दो भाव पाये जाते हैं। सिद्धों में
(iv) मैं आठ कर्मों का अकर्त्ता हूँ और पुण्य का अभोक्ता हूँ। अजीव
(v) मेरे गर्भज और सम्मूर्च्छिम ये दो भेद होते हैं। मनुष्य
(vi) मेरा अर्थ पुरुषाकार लोक का चिन्तन करना है। संस्थान विचय
(vii) मैं प्रायश्चित्त का ऐसा दोष हूँ, जो काँपते-काँपते आलोचना करने पर लगता हूँ। आकंपइता
(viii) मैं एक ऐसी ऊनोदरी हूँ, जिसमें अष्ट कवल प्रमाण आहार किया जाता है। पौन ऊनोदरी
(ix) मेरी तरह जयंती श्रमणोपासिका ने दीक्षा लेकर केवल ज्ञान प्राप्त कर मोक्ष गति को प्राप्त किया। देवानन्दा

(x) मेरी अपेक्षा से जीव सादि अनन्त है। एक सिद्ध

(xi) मैं एक ऐसे देवलोक का देव हूँ, जिसमें जघन्य 7 पक्ष और उत्कृष्ट 10 पक्ष में श्वासोच्छ्वास लेता हूँ। पाँचवाँ देवलोक

(xii) मैं एक ऐसी प्रतिसेवना हूँ, जिसमें अहंकार वश संयम में विराधना होती है। दर्प

(xiii) मैं एक ऐसा कायक्लेश तप हूँ, जिसमें पलाथी आसन से बैठा जाता है। नेसज्जिए

(xiv) मैं एक ऐसी क्रिया हूँ जो चीर-फाड़ आदि करने लगती हूँ। वेयारणिया

(xv) मैं एक ऐसा मनुष्य हूँ, जो चौदह अशुचि स्थानों में उत्पन्न होता हूँ। सम्मूर्च्छिम मनुष्य

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए- 9x2=(18)

(i) संवर के 57 भेद कौनसे हैं ? संक्षिप्त में लिखिए।
22 परीषह, 5 समिति, 3 गुप्ति, 10 यति धर्म, 12 भावना, 5 चारित्र, ये संवर के कुल 57 भेद है।

(ii) सात मास की दीक्षा पर्याय वाले श्रमण निर्ग्रन्थ का सुख कौनसे देवों के सुख के बढ़कर होता है?
7 मास की दीक्षा पर्याय वाले श्रमण निर्ग्रन्थ का सुख सनतकुमार और महेन्द्र कुमार (3-4) देवलोक के देवों से बढ़कर होता है।

(iii) अनुत्तर विमान के देव कितने समय बाद श्वासोच्छ्वास लेते हैं?
चार अनुत्तर विमान जघन्य 31 पक्ष, उत्कृष्ट 33 पक्ष में और सर्वार्थसिद्ध विमान के देव अजघन्य-अनुत्कृष्ट 33 पक्ष में श्वासोच्छ्वास लेते हैं।

(iv) पच्चीस क्रियाओं में से प्रथम दो क्रियाओं के नाम अर्थ सहित लिखिए।
1. काइया- शरीर के अशुभ योगों से लगने वाली क्रिया।
2. अहिगरणिया- शस्त्र आदि से लगने वाली क्रिया।

(v) संस्थान के कितने भेद होते हैं ? केवल नाम लिखिए।
संस्थान के पाँच भेद होते हैं-1. परिमण्डल, 2. वृत, 3. त्रिकोण, 4. चतुष्कोण और 5. आयत।

(vi) यह लोक कितना बड़ा है ?
हे गौतम! यह लोक असंख्याता कोड़ाकोड़ी योजन का लम्बा चौड़ा विस्तार वाला है।

(vii) किस कारण से जीव कर्मों की स्थिति बढ़ाता है और किस आचरण से घटाता है ?
हे जयंति! अठारह पापों का आचरण करके जीव कर्मों की स्थिति बढ़ाता है और अठारह पापों का त्याग करके जीव कर्मों की स्थिति घटाता है।

(viii) प्रदेश बंध को समझाइए।
जीव के साथ सम्बद्ध कार्मण वर्गणा के स्कन्धों का न्यूनाधिक प्रदेश वाला होना प्रदेश बंध कहलाता है।

(ix) अनित्यानुप्रेक्षा को समझाइए।

संसार, सांसारिक पदार्थ एवं सम्बन्ध तथा शरीर की अनित्यता नश्वरता का चिन्तन करना।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 9x3 = (27)

(i) मोक्ष तत्त्व के नौ द्वारों के केवल नाम लिखिए।

1. सत्पद द्वार, 2. प्ररूपणा द्वार 3. द्रव्य प्रमाण द्वार 4. स्पर्शना द्वार 5. काल द्वार
6. अन्तर द्वार 7. भाग द्वार 8. भाव द्वार 9. अल्प बहुत्व द्वार।

(ii) प्रायश्चित्त लेने वाले के 10 गुणों के केवल नाम लिखिए।

1. जाति सम्पन्न 2. कुल सम्पन्न 3. विनय सम्पन्न 4. ज्ञान सम्पन्न 5. दर्शन सम्पन्न
6. चारित्र सम्पन्न 7. क्षान्त 8. दान्त 9. अमायी 10. अपश्चातापी।

(iii) भिक्षाचर्या के प्रथम तीन भेद अर्थ सहित लिखिए।

1. दव्वाभिगए चरए- द्रव्य विशेष का अभिग्रह
2. खेत्ताभिग्गह चरए- क्षेत्र,स्थान विशेष का अभिग्रह करना।
3. कालाभिग्गह चरए- समय विशेष का अभिग्रह करना।

(iv) नव तत्त्वों में रूपी कितने हैं, अरूपी कितने हैं ? नाम लिखिए।

नव तत्त्व में रूपी- पुण्य, पाप, आश्रव और बंध
नव तत्त्व में अरूपी- जीव, संवर, निर्जरा और मोक्ष
अजीव पुद्गलास्तिकाय की अपेक्षा रूपी है और धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय और काल की अपेक्षा अरूपी है।

(v) श्वासोच्छ्वास के थोकड़े में नारकी के नेरिये श्वासोच्छ्वास किस प्रकार लेते हैं ? स्पष्ट कीजिए।

नारकी के नेरिये आभ्यन्तर ऊँचा श्वास, नीच श्वास और बाह्य ऊँचा श्वास, नीच श्वास लोहार की धमण की तरह निरन्तर लेते हैं।

(vi) सभी भवसिद्धिक जीव मोक्ष में चले जायेंगे तो क्या लोक भवसिद्धिक जीवों से रहित हो जायेगा ?

हे जयंति णो इणट्ठे समट्ठे-यह नहीं हो सकता, सभी भवसिद्धिक जीव मोक्ष में जायेंगे तो भी यह लोक भवसिद्धिक जीवों से रहित नहीं होगा।

(vii) विनय के सात भेदों के केवल नाम लिखिए।

1. ज्ञान विनय 2. दर्शन विनय 3. चारित्र विनय 4. मन विनय
5. वचन विनय 6. काय विनय 7. लोकोपचार विनय

(viii) भाव ऊनोदरी के कितने भेद हैं ? नाम लिखिए।

भाव ऊनोदरी के 6 भेद है- अल्प क्रोध, अल्प मान, अल्प माया, अल्प लोभ, अल्प शब्द, अल्प कलह।

(ix) यावत्कथिक अनशन के तीन भेद तथा उनके उपभेद लिखिए।

यावत्कथिक के तीन भेद- पादोपगमन, इंगितमरण, भक्त प्रत्याख्यान, इन तीनों के दो-दो भेद-1. निहारी (गाँव में होवे-अग्नि संस्कार सहित) 2. अनिहारी- (गाँव के बाहर होवें- अग्नि संस्कार रहित)